

Nirmal Dham Bhoomi Puja

Date : 7th April 2000
Place : Noida
Type : Public Program
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

II Translation

English	10 - 16
Hindi	-
Marathi	17 - 18

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा प्रणाम। मैंने तो इतनी आशा नहीं की थी कि आप इतने लोग इतनी बड़ी तादाद में इस जगह आएंगे और इस कार्य को समझेंगे। एक बार एक प्रोग्राम में हम जा रहे थे। दौलताबाद जगह का नाम है, उससे गुजर के सामने जाना था। रास्ते में गाड़ी खराब हो गई। सहज में ही गाड़ी खराब हो गई। सो उतर के देखा जो वहाँ बहुत सी औरतें, सौ से भी अधिक, अपने बच्चों समेत। बहुत से बच्चे उनसे कई गुना ज्यादा। वहाँ एक नल फूटा था उससे पानी ले रहों। इतनी धूप, बड़े फटे से कपड़े पहने हुए किसी तरह सर पे चुन्नी लिए हुए। मुझे समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है। तो मैंने उनसे पूछा कि आप लोग यहाँ क्या कर रहे हो? यहाँ कैसे आए? तो उन्होंने कहा कि हम सब मुसलमान औरतें हैं और हमारा तलाक हो गया और ये हमारे बच्चे हैं। जो महर थी वो बहुत ही थोड़ी थी। उसमें तो एक महीना भी चलना मुश्किल था लेकिन किसी तरह से हमें यहाँ काम मिल गया तो हम यहाँ गिट्टी फोड़ते हैं। और रहते कहाँ हो? तो कहने लगी सामने जो घर है। कुछ कपड़े थे। टूटा फूटा सा एक मकान तो नहीं कह सकते, उसी में हम सब रहते हैं। वहाँ पता नहीं क्यों, मुझे बहुत रोना आया और एक पत्थर पर बैठ कर मैं रोने लगी। मेरे अंदर एक भावना

आई कि हमारे देश में इतनी संस्कृति है इसकी पवित्रता भी है और औरतें अपने चरित्र को एक बहुत ऊँची चीज समझती हैं। सब कुछ होते हुए भी हमारे देश में इतनी दुर्दशा क्यों है? तो ये ख्याल आया कि जहाँ की माताएँ ही इस प्रकार पीड़ित होंगी तो उनके बच्चों का क्या हाल होगा? वे किस तरह से अपने बच्चों को पाल सकती हैं और उनको कौन सी शिक्षा दे सकती हैं? तब मेरे मन में ये विचार आया कि ऐसी कम से कम एक संस्था बननी चाहिए कि जहाँ इस तरह की औरतें जिनका कोई सहारा नहीं, जो किसी तरह से जी रही हैं, उनके लिए कुछ न कुछ सहारा बनाना चाहिए। अब इसे काफी साल हो गए, लेकिन सहजयोग में भी काफी मैं व्यस्त रही। उत्तर प्रदेश तो मेरा ससुराल है और वहाँ जो मैंने देखा कि औरतों की कोई इज्जत नहीं। औरतों को कोई मानता नहीं, सब हावी। अगर कोई औरत जबरदस्त है तो वो ही जी सकती है। जो Dominate कर सकती है वो ही जी सकती है और जो सौधी सरल है उसे खूब दबाया जाता है। हर तरह से। उसका बिल्कुल ख्याल नहीं। वो मरे चाहे जिए। अगर मर गई तो लोग उनको दावते देंगे कि फिर से शादी करा। सब देख के मैं तो हैरान हो गई क्योंकि महाराष्ट्र में ऐसी हालत नहीं है। और जो विधवा हो गई तो विधवा ही बनी रही बेचारी।

सो तो मेरे अनुभव की बात थी तो मैंने कहा कि ऐसी संस्था सबसे पहले उत्तर प्रदेश में बनना चाहिए और बड़े आनंद की बात है कि उत्तर प्रदेश में ही यह संस्था शुरू हो रही है। इसमें तो हर हालत में चाहेंगे कि जो औरतें अपने पैर पर खड़ी नहीं हैं और मोहताज हैं हर चीज के लिए, उनमें ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वे अपने पैर पर खड़ी हो जाएं और अपने बच्चों का पालन पोषण कर सकें। उनको इज्जत मिले। पर इसी से सब कुछ होने वाला नहीं। ये समझ लीजिए कि ये एक बहुत छोटे पैमाने की बात है लेकिन ये तभी होगा जब यहाँ के समाज में स्त्री का स्थान बनेगा। यहाँ के पुरुष इस बात को समझेंगे कि उनका अपने घर की, औरतों की तरफ, बच्चियों की तरफ क्या कर्तव्य है और क्या उन्हें करना चाहिए। उनका जीवन बहुत एकांगी है उसको बदलना चाहिए। और उनको अपनी Family अपने बाल-बच्चे अपनी पत्नी, माँ सबको बहुत प्यार से देखना चाहिए और समझना चाहिए। यहाँ आप सब इतने लोग हैं। सब पुरुषों ने घर में कसम ले ली कि हम औरतों की इज्जत करेंगे और कोई विधवा हो जाता है। आदमी तो कभी होता ही नहीं विधवा। लेकिन घर कोई औरत विधवा हो जाए तो उसकी दुर्दशा है। इतनी बेचारी को दुर्दशा कर देते हैं। औरतें ही खुद उनको कहती हैं। औरतें ही उनको कहती हैं कि ये तो तुम्हारा दुर्भाग्य है, तुम्हारा ही कुछ है और यहाँ तक कि तुमने अपने पति को खा लिया है। ऐसा भी कहती हैं। ये तो मैंने अपने कान से सुना है। इसीलिए पहले शायद औरतें बबराहट से सती हो जाती थीं। और अगर कोई युवती विधवा हो जाए और देखने में वह सुन्दर हो तो

बस उसको कोई खैर नहीं। तो पहले तो मैंने कहा कि सहजयोग में कोई विधवा घर आए तो उसका विवाह जरूर करवाना चाहिए। पर अपने देश में कौन करेगा और करेगा भी तो उसे सत्रह बातें सुनाएगा। पुरुष होना ही वो सोचते हैं कि विशेष रूप के अधिकारी हैं कि जो चाहें सो कहें। लेकिन ये नहीं जानते कि यह नर्क की गति है। ये बहुत बुरी बात है, दुष्टता है। दूसरों के साथ दुष्टता करना ही बुरी बात है। परन्तु अपनी पत्नी, जो कि आपके सारे सुख का साधन है उसके साथ इस तरह से व्यवहार करना, तो अपनी संस्कृति का नहीं है यह काम। भारतीय संस्कृति में यह कहा जाता है "यत्र नार्याः पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता", जहाँ स्त्री पूजनीय हो वहाँ पर देवता निवास करते हैं। इतना ही नहीं। पर स्त्री को भी पूजनीय होना चाहिए। इतने विपत्ति में, इतने तकलीफ में आज हमारे देश की नारी है, उसी वजह से हमारे देश में कभी अच्छा साम्राज्य आ नहीं सकता। कुछ अच्छा हो ही नहीं सकता। क्योंकि सारी देवियाँ, आजकल नवरात्री भी हैं, ऐसी बातों से बहुत नाराज हैं। वो कोई भी आशीर्वाद नहीं देंगी आपको। लक्ष्मी से ले कर हर एक देवी कोई भी आशीर्वाद नहीं देंगी आपको, गर आप अपनी पत्नी का खयाल न करें और उसको सम्मान से न रखें। इसीलिए हमारे देश में इस कदर हर तरह की परेशानी है। मैं तो सोचती हूँ कि गर ये चौक ठीक हो जाए तो हमारी हर तरह की परेशानियाँ ठीक हो जाएँ क्योंकि साक्षात् लक्ष्मी का वरदान इसी से मिलता है। घर की गृहलक्ष्मी को जो नहीं मानते तो उनको क्या अधिकार है कि लक्ष्मी के आशीर्वाद से वो प्लावित हों? अब

इस मामले पर और मैंने Video पर देखा था कि उन्होंने विधवाओं को दिखाया था जो वृद्धावन में और उधर गोकुल में रहती हैं। कृष्ण तो सोच रहे होंगे कि पता नहीं कहाँ से बेचारियों के साथ ज्यादा तो हो रही है। वो विधवाएँ हैं और उनकी बेचारियों की इतनी दुर्दशा है कि सारे दिन वे गाना गाएँ और एक रुपया उनको मिलता है और उनको हर तरह से वहाँ के लोग इस्तेमाल करते हैं। पर ऐसी फिल्म देखने से किसी में जागृति नहीं आई! वहाँ पाँच लाख औरतें हैं इस तरह की। किसी के मन में धारणा नहीं आई, कि इतना पैसा कमा रहे हैं, ये कर रहे हैं, वो कर रहे हैं, कि जा करके उनका कुछ कल्याण करें, उनके लिए कोई चीज़ बनाए? माने मनुष्य इस कदर संवेदनशील नहीं, बिल्कुल उल्टा ही है। उसके मन में ये भी भावना नहीं आई। इस फिल्म को बहुत दिखाया गया। फिर मैंने कहा ऐसी फिल्म को दिखाने से कोई फायदा नहीं। अब एक थी वो वाकई यहाँ आई थी, वो दिखाने के लिए कि वो तो सिर्फ बदनाम करने के लिए आई थीं। उनकी पब्लिसिटी बहुत हो गई, वो फिल्म दिखाने से क्या होगा। इन लोगों के पास इतने पैसे हैं तो क्यों न ये विधवा के आश्रम आदि कायदे के बनाए? आज हैं दो चार लेकिन वो कायदे के नहीं हैं। तो ऐसे आश्रम क्यों न बनाए जाएँ जहाँ इन औरतों का पालन पोषण तो हो कम से कम। बहुत सी औरतें तो इसीलिए अपनी आत्महत्या कर लेती हैं कि ऐसे जीने से अच्छा हम आत्महत्या कर लें। एक तो स्त्री के लिए विवाह करना ही चाहिए और विवाह के बाद उसके पति घर नहीं रहे तो गए काम से। फिर उसका जीना मुश्किल और उस पर हर

तरह की आफतें। हर तरह की आफत, इस देश में और देश में इसलिए नहीं हैं कि उनमें नैतिकता नहीं है। कोई घर औरत विधवा हो तो वो घूमघाम के अपना पति ढूँढ़ लेगी नहीं तो और कोई कारोबार ढूँढ़ लेगी। ये अपना ऐसा देश है कि पद्मिनी के साथ 32000 औरतें होम कुण्ड में कूद पड़ीं अपनी आबरू बचाने के लिए, अपनी इज्जत बचाने के लिए। इस देश में फिर औरतों के लिए कौन सा मार्ग बचा हुआ है? अपनी इज्जत से वो रह ही नहीं सकती। उनकी तो इतनी बुरी दशा है कि इससे मैं सोचती हूँ कि किसी को घर कोई रोग हो जाए तो कम से कम वो किसी अस्पताल में जा सकता है। उसके लिए कोई न कोई व्यवस्था हो सकती है। पर ये बताइये कि इस तरह की औरतों की जो पीड़ा है वो किस तरह से आप कम कर सकते हैं? इतना दुःख और कोई सहानुभूति तक नहीं। यहाँ तक कि एक विधवा स्त्री को घर आपने देख लिया तो बड़ा अपशानु हो गया। एक विधवा स्त्री है तो उसके हाथ का खाना नहीं खाने का। ये अपना समाज ये नहीं जानता कि ये कहीं शास्त्रों में लिखा नहीं है। श्री राम ने स्वयं मंदोदरी का विवाह विभीषण से करा दिया। श्री राम ने (अनेक उदाहरण हैं) जिनको आप इतना मानते हैं। वो जब विधवा हो गई तो उसका विवाह उन्होंने विभीषण से करा दिया। तो फिर कहेंगे कि हाँ यहाँ तक ठीक है और नहीं तो इससे आगे कहीं नहीं शादी कर सकते। अब आप ही सोचिये कि घर आपकी माँ, बहन, बेटों, उनकी दुर्दशा हो रही है तो ऐसे समाज से तो भगवान बचाए। बेहतर है कि ऐसा कोई समाज ही न हो और अगर है तो सबको

जीने का, आनंद से रहने का पूर्ण अधिकार हो। सो मैं चाहूंगी कि जिन्होंने कभी भी अपने घर में या बाहर में औरतों को सताया हो, उनको बिल्कुल बदल जाना चाहिए। और अपने को दोषी समझना चाहिए कि हमने एक अनाथ असहाय औरत को सताया है अपनी पत्नी को भी जिसने सताया है। अपनी बेटी को जिसने सताया है वो सब बहुत बड़े दोषी हैं और मैं ये नहीं बता सकती कि उनका क्या हाल होगा।

क्योंकि अब सत्ययुग की शुरुआत होगी और हरेक के लिए जरूरी है कि वो धर्मपथ पर रहे। धर्म में सबसे बड़ी चीज है प्रेम। और जो अपनी पत्नी को ही प्रेम नहीं कर सकता तो वो किसको प्रेम करेगा? अपनी बेटी से ही प्रेम नहीं कर सकता वो किसको प्रेम करेगा? उसका दोष यही है कि वो स्त्री है। और अगर दुनिया में स्त्री ही न होती तो आपकी माँ कहाँ से आती और आप कहाँ से आते? इसके प्रति बहुत तीव्र संवेदना आनी चाहिए। अच्छा महाराष्ट्र में भी काफी बाल विधवा का प्रभाव था। इतना नहीं तो भी। पर वहाँ पर ऐसे-2 लोग हो गए जैसे तिलक थे, गोखले थे, रानाडे थे। इन्होंने सबने विधवाओं से विवाह किया और उन्होंने वहाँ पर बहुत चेतना लाई। Reforms किए। वहाँ पर पूना में जैसे औरतों की शिक्षा एकदम निःशुल्क है स्नातक तक उन्हें एक पैसा नहीं देना पड़ता। उससे भी ज्यादा यहाँ कार्य करने को जरूरत है क्योंकि यहाँ उससे कहीं ज्यादा दुर्दशा है। यहाँ के लोगों में जागृति लाना और उनमें चेतना लाना बहुत जरूरी है। उसी को जगह अगर औरत जबरदस्त है तो उसका राज होता है। बहुत सी

औरतों ने सीख लिया है कि बेहतर है हम लोग जबरदस्त बन जाएँ। पर इसमें कोई फायदा नहीं। औरत का तां कार्य ही है कि सब चीज को आत्मसात करे क्योंकि पृथ्वी जैसी उसकी अपनी शक्तियाँ हैं। किन्तु अपनी शक्तियों को जगाएँ और उससे सृजन करें और अपने दम पर करें और स्वाभिमान से रहे। किसी तरह की भी बातें करने से यह कार्य नहीं होगा। इसको पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि ये महापाप है और ऐसे गलत काम करने नहीं देने चाहिए। तभी हमारे देश में परिवर्तन आ सकता है। सिर्फ सहजयोग में आने से कोई फायदा नहीं है। सब लोगों को, सहजयोगी हों या नहीं हों, आपके पड़ोस में ही यदि कोई औरत को मार रहा है तो आपको उसे छुड़ाना चाहिए। कोई शराब पी कर घर में दंगा मस्ती कर रहा है तो उसको ठिकाने लगाना चाहिए। ये आपका सामाजिक कर्तव्य है और जब तक ऐसी जागृति आप लोगों में नहीं आएगी तब तक ये कार्य नहीं हो सकता। दूसरी बात खुद औरतों की ऐसी है कि इनमें इतना ज्यादा स्वाभिमान है कि ये हर हालत सह लेंगी किन्तु इनसे किसी विधवा से कहो कि तुम शादी कर लो तो हो गया बस। हमारे यहाँ एक सहजयोगिनी थी। देखने में बहुत सुन्दर थी और तीन बच्चे थे। बड़ा लड़का कोई 15-16 साल का होगा अब वो कमाने के लिए कहीं भी जाए, कोई भी काम करे, बस आदमी उसके पीछे पागल। अपनी बीबी के पीछे में नहीं है। दूसरे की बीबी और वो विधवा है तो चलो उसके पीछे। तो उनसे मैंने कहा कि, बहुत गोल घुमा के, मैंने कहा कि, मेरे ख्याल से ये जो आपके प्रश्न हैं इसके लिए अच्छा है कि आप शादी

कर लीजिए। तो वो तो बेहोश हो गई। सुनते के साथ ही बेहोश हो गई कि माँ आपने ऐसी बात कैसे कही? जब उन्हें होश आया तो उसने कहा "माँ कौन सा मुझमें ऐसा दोष पाया जो आपने इतनी कड़ी सजा सुनाई। अरे भाई ये कौन सी तुम्हें मैं सजा सुना रही हूँ। माने ये भी इतना ज्यादा हमारे अंदर संस्कार और Conditioning है औरतों में, विधवा हो गए। ये हमारे समाज की देन है। विधवा हो गए तो गए इसके बाद हम विवाह नहीं कर सकते, कुछ नहीं कर सकते, हम करेंगे तो बस बेकार। कौन समझाए। तब फिर मैंने उनके लड़के को समझाया कि तुम अपनी अम्मा को समझाओ। वो कहीं नहीं रह सकती थी क्योंकि दिखने में सुन्दर थी और शायद विधवा थी। तो एक साथ बाद उनकी खोपड़ी में बात आई, जब उन पे काफी आफतें आ गई तब एक साल बाद उनकी समझ में आई कि माँ जो कह रही है ठीक बात है। फिर शादी की। यहाँ तो होना आवश्यक है, फिर कोई विधवा हो गई तो बिल्कुल ही दुनिया से गई बीती औरत। उनकी शादी फिर अमेरिका में करवा दी तो उनके बच्चे भी पल गए, बड़े हो गए, अपने-2 ठिकानों पर पहुँच गए। वो लोग भीख माँगेगी पर फिर से शादी नहीं करेगी। ये भी कोई भगवान ने बताया है? किसी शास्त्र में लिखा है? कहीं भी नहीं है। ये सब यूँ ही बनाए हुए हैं, औरतों पर आक्रमण करने के लिए। हम तो वैधव्य को मानते ही नहीं हैं। मानते ही नहीं हैं। क्योंकि वैधव्य क्या हुआ, जो पति, मर गए, तो मर गए। अब वो वैधव्य बन कर उनके माथे पर बन गया। क्या कोई जरूरी चीज है? या तो दोनों आदमी साथ ही मरें और नहीं मरें तो

औरतों को यह दुर्दशा करो। ऐसे कोई विधि तो है नहीं कि साथ मरना चाहिए, गर यह धर्म होता तो सब साथ ही मरते। पर साथ तो मरते नहीं। गर इतफाकन औरत बच गई तो वो तो गई काम से। इतना दुःख औरतों ने उठाया है कि अब आपको उठाने की जरूरत नहीं। फिर वो बड़ी लड़ाका भी हो सकती हैं, गुस्सैली भी हो सकती हैं। घर में बड़ा राजकारण भी करती हैं सब कुछ हो सकता है। लेकिन वो अच्छी औरत नहीं बन सकती। वो या तो बहुत दुःखी, या बहुत परेशान, तो इसलिए यह एक संस्था छोटे ही पैमाने पर बनाई गई और इस पर हम कोशिश करेंगे कि इसमें उन लोगों को ऐसे रास्ते पर लगाए कि वो अपने पैरों पर खड़े हों तथा स्वाभिमान से जीएं। और गर वो विधवाएं हैं और अभी जवान हैं तो उनकी हम अच्छी जगह शादी कर दें। आप लोग नहीं करियेंगा तो अमेरिका में करवा देंगे। आप लोग बैठे रहिए यहाँ। यही बेहतर है। अपने को बहुत समझते हैं तो बैठे रहिए। ये घमण्ड आदमी का जाना चाहिए। मैं हमेशा कहती हूँ कि reform औरतों का करने की जरूरत नहीं आदमियों का reform करो। इतना घमण्ड किस चीज का है आपके सिर पर। क्या समझते हैं आप अपने आप को। अभी कोई बता रहा था कि कोई गर I.A.S में आ गया तो वो तो सबसे बड़ा दामाद है। तो मैंने कहा I.A.S. में है क्या? कौड़ी न धेला। कुछ कमाई नहीं, कुछ नहीं खास। मैं जानती हूँ न। गर ईमानदार है तो। गर बेईमान है तो भी आफत और गर ईमानदार है तो भी आफत। फिर भी औरतें उसमें रहती हैं। अपने चार लोगों को देखती हैं संभालती हैं प्यार करती हैं। पर मेरी समझ में नहीं आया कि ये खोपड़ी

में कैसे आया आदमियों की कि वे अगर I.A.S. हो गए तो बड़े अफलातून हो गए। कोई भी बात खोपड़ी में घुस जाती है अगर इंसान के, वो भी खासकर हिन्दुस्तान में तो वे वाकई में Balloon के जैसे उड़ने लग जाते हैं। फिर चाहे किसी के लात मारो। किसी के थप्पड़ मारो। किसी को डंडा मारो। चाहे कुछ भी करे, उसको लगता नहीं कि हम ये क्या कर रहे हैं। वैसे तो Vegetarian बनेंगे। जैन लोग कहते हैं कि मच्छर को मत मारो। खटमल को मत मारो, जो खून पीते रहते हैं हमेशा, उनको मत मारो। पर अपनी बीबी को मार सकते हैं, आसान। क्योंकि वो आपकी बीबी है और इसीलिए तो आई है कि मार खाए। अगर मार नहीं खा सकती तो वो बीबी क्या? ये जो हमारी दशा है और जो हम इस निम्न स्तर पर हैं उसकी भी वजह यह है कि हमारे अंदर के जो मूल्य हैं वे खत्म हो रहे हैं। पहले हमारे यहाँ कहते हैं कि जो बड़भूँजे होते हैं वे ही अपनी बीबी को मारते हैं। मैंने तो देखा यहाँ सभी मारते हैं, ऐसी कोई बात नहीं। कोई इस मामले में किसी को शर्म नहीं, दया नहीं। हाँ बाकी मामले में सबको खूब शर्मोहया है परन्तु इस मामले में किसी को शर्मोहया नहीं। बीबी को सबके सामने डाँट देंगे। कोई उनको उसमें हरज नहीं कि भई हमने क्यों डाँटा। एक वो पहले ही से शिक्षा नहीं घर में। यही सिखाया जाता है क्या कि इस तरह से आप व्यवहार करो? तो जहाँ तक मुझे हो सकता है मैं इस संस्था के लिए पूरी मेहनत करूँगी और जितना हो सकता है इसमें औरों का उद्धार करना चाहिए। गर आज हमारे देश में 65 फीसदी औरतें हैं, उससे भी ज्यादा, तो उस एक पूरे समाज के एक महत्वपूर्ण अंग को आप

शक्तिहीन गर दें तो किस काम का है देश किस काम का है? लगड़ा है देश आपका पूरी तरह से। बड़ी-2 बातें करने से और Lecture से कुछ नहीं होगा, फिल्म दिखाने से, नाटक दिखाने से कुछ नहीं होगा। कर के दिखाना होगा। अपने जीवन में और अपने समाज के जीवन में खड़े हो जाएँ कुछ लोग कि हाँ हम तो हैं reformist। अब बेकार की चीजें फेंको इसको। इसकी कोई जरूरत नहीं। ऐसे बंध गए हैं कि वो भी अपनी दुष्टता से छुटकारा नहीं पाते और औरतें ऐसी बन गई हैं कि वो उसको सहते ही जाती हैं। अब इसका परिणाम क्या हो रहा है वो कोई नहीं देखता बच्चे खराब हो रहे हैं। आपके बच्चे ही दुष्ट हो रहे हैं। चोरी करेंगे। ये करेंगे। ये सब आया कैसे? क्योंकि समाज टूट गया, क्योंकि family टूट गई, इसलिए हुआ। तो अपने कुटुंब जो है, बहुत महत्वपूर्ण चीज है। एक-एक कुटुंब से ही समाज बनता है और समाज से ही देश बनता है। देश की बातें करते हैं और कुटुंब। कुटुंब तो खत्म हो रहे हैं। अपने कुटुंब को इज्जत से रहना, स्वाभिमान से रहना, देशभक्ति से रहना तभी हो सकता है जब घर की औरत ठीक हो। उसकी इज्जत हो। उसको समझने की कोशिश करें। हमारे महाराष्ट्र में भी ऐसी एक दो समाज व्यवस्था है जहाँ इधर से जैसा ही मामला बहुओं के साथ किया जाता है। पर वो भी बदल जाएगा और ये भी बदल जाएगा। इसको बदलना ही पड़ेगा। अगर बदलेंगे नहीं, उनके बच्चे उठ कर इन्हीं आदमियों को मारेंगे। बीबी को मार की बात तो बाद में होगी। पहले इनको मारेंगे। तब सबकी खोपड़ी ठीक आएगी। इतना अहंकार मानव में है, मनुष्य में है। आखिर किस चीज

का इतना अहंकार है? कौन सी ऐसी चीज तुमने पाई है जिसका तुम इतना अहंकार कर रहे हो?

अब इस संस्था को चाहिए कि सब लोग पूरी तरह से मदद करें। ये नहीं कि सिर्फ पैसा दे दें, पर इसको पनपाने में। अब सबसे बड़ा प्रश्न तो ये है कि हमें ऐसी औरतों को खोजना है, उनको खोज कर निकालना है। अब हमें क्या पता कि कहाँ कि औरतें हैं, क्या, अब हम तो यहाँ रहते भी नहीं। तो इस तरह की औरतें अगर आपको मालूम हैं, जो पीड़ित हैं, दुःखी हैं और जिनका कोई सहारा नहीं, और जो विधवा बन कर बहुत कुछ सह रही हैं, ऐसी सब औरतों को आपको इस संस्था में लाना चाहिए। अभी तो ये कह रहे हैं कि 100 औरतों का इंतजाम है। 100 से क्या होगा, पर उसके बाद उनसे बातचीत करके, उनको समझा बुझा के, जो लोग अंदर आएंगी वो तो आएंगी ही लेकिन जो बाहर रहेगी, उनको भी समझाया जा सकता है। उनके पति को भी समझाया जा सकता है, उनके घर वालों को भी समझाया जा सकता है। अपना ही देश ऐसा है जहाँ अब भी कुटुंब व्यवस्था चल रही है। बाकी कहीं नहीं है। उसका उत्तरदायित्व औरतों को है, आदमियों को नहीं। ये भारतीय नारी की विशेषता है जिसने इस देश को रोक रखा है, नहीं तो कब के चले जाते। इसलिए अब आप समझ लीजिए कि गर आपने अतिशयता करी तो यही औरतें जो हैं क्रान्ति कर देंगी आपके लिए। वो ठीक नहीं है, वो प्रेम का हनन है, अच्छी बात नहीं। अच्छी बात ये है कि समझदारी रख कर अपनी स्त्रियों की अपनी बेटियों की हिफाजत करें। उनको देखें, सम्भालें, उनको प्यार दें। और उनको ये पता होना चाहिए

कि आप उन्हें प्यार करते हैं। पूरी समझ, इसमें कोई ऐसी बात नहीं कि वो आपकी खोपड़ी पर बैठ जाएंगी। एकाध होती हैं। लेकिन आदमी गर कमजोर नहीं है तो औरत कभी भी उसकी खोपड़ी पर नहीं बैठ सकती। पर वो इतनी दबो हई भी नहीं रहना चाहिए कि जिससे बच्चे भी नहीं पनप रहे हैं, जिसमें कुछ फूल ही नहीं खिल सकते। बच्चे तो माँ को मानते ही नहीं। माँ के पैर भी इस तरह से छुएँगे जैसे कोई ईंट या पत्थर बीच में पड़ा हो। और बाप का फुरसत नहीं। तो बच्चे तो बिगड़ ही जाएंगे। और उससे जो जो आज दशाएं हुई हैं, जो-जो आप पढ़ते हैं, पेपर में देखते हैं, उसका कारण ही ये है कि हमारी कुटुंब व्यवस्था ठीक नहीं है। वो बहुत जरूरी है कि उसको आप ठीक रखिए। यही हमारे समाज का ताना बाना है। इसके सहारे आज आप भी यहाँ बैठे हुए हैं और आगे भी अगर चलाना है तो कृपया याद रखिए कि औरत का मान रखना उसका उत्थान करना और लोगों को परिवर्तित करना भी आपको परम लक्ष्य की तरह से समझना चाहिए और उधर ध्यान देना चाहिए। ये मेरी आंतरिक इच्छा है। ऐसा वो आपको सबको मैं हमेशा कहती हूँ कि अनन्त आशीर्वाद। किन्तु उस आशीर्वाद में सबको अपने साथ समेटिए। हमें तो लोगों को जोड़ना है। जब एक कुटुंब ही को आप नहीं जोड़ सकते तो आप किसको जोड़ेंगे? सबको चाहिए कि प्रेम से आपस में रहें। अब आप सहजयोगी हो गए और ये बड़ी भारी बात आपने प्राप्त करी। ये ज्ञान मार्ग है और इसमें आपको पता है प्रेम क्या चीज है और किस तरह से आदान प्रदान करना चाहिए। आपस में किस तरह से समझना चाहिए।

इस चीज़ से आप हैरान होइयेगा कि सारा समाज एकदम बदल जाएगा। अपने को परदेसियों जैसे नहीं होना है। बिल्कुल भी नहीं। वहाँ तो कचहरी करेंगी औरतें, अमेरिका में तो औरतें सात-सात, आठ-आठ शादी करती हैं। औरतें और रईस हो जाती हैं तो पति सब गरीब हो जाते हैं। ये हम लोग नहीं चाहते। चाहते क्या हैं? आपसी प्रेम हो, बच्चे अच्छे से हों और आप देखिए, इससे बड़ा लाभ होगा। बहुत लाभ होगा। इतना लाभ होगा ऐसे समाज का और ऐसे देश का। इसमें ये आपसी झगड़े करना कोई कचहरी करना, कोई जरूरत नहीं। गर ये सबके अच्छे के लिए है तो ये ही क्यों नहीं करते। इस तरह से समझदारी

आनी चाहिए। समझदारी में बढ़ना चाहिए।

यहाँ तो मैं देख रही हूँ बहुत से सहजयोगी बैठे हुए हैं तो उनके लिए एक नई बात अब बता रही हूँ। आप सहजयोगी हैं तो सब लोगों को समझ लेना चाहिए कि ये सहजयोगी हैं। उसी प्रकार सहजयोगी समझ लेना चाहिए कि जो सहजयोगी हैं वो हैं जो नहीं हैं तो नहीं हैं। सबको समेटना आना चाहिए। इसी सहज योग के स्वभाव से ही आप दुनिया को जीत सकते हैं। जो बात मैंने कही है उसको आप हृदय में बाँध लें। वह दर्द है मेरे अन्दर। इस दर्द को आप लोग खत्म कर सकते हैं।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze



I bow to you all the seekers of truth. I never expected that you will come in such a big number and understand the importance of this work. Once we were going for a Sahaj Yoga programme, we were passing through the place known as Daulta Bad. By chance our car developed some problem. It stopped. When I got down, I saw there were many women, more than one hundred, standing there with their children. The number of children was many times more than the women. These women were taking water from a leaking tap, wearing tattered clothes, with covered heads they were there in that scorching heat. I couldn't understand as to what was happening! I asked them, "what are you doing here? Why did you come here?" They replied, we are all Muslim ladies, our husbands have divorced us. These are our children. The amount of Mehar,

which we got from our husbands, was so small that it was not enough even to pull on for a month. Here we have got employment. We break stones to small pieces to earn our livelihood. But where do you live? They indicated towards a building. There were few clothes hanging and a dilapidated house which could not be called a house. They said we all live in it. Tears rolled down my eyes. I sat there on a stone and started crying. A question rose in my mind that despite the rich culture and purity of our country, and despite the fact that the women of this country hold their character in high esteem, why the condition of our country is so miserable? The another thought that came to my mind was, if the mothers are so miserable, what will be the condition of the children? How could they rear up their children and educate them?

There a thought came to me that there should be some organisation which could support this sort of destitute and neglected women and give them some help and support. It happened many-many years ago. I was too much absorbed in Sahaj Yoga work. My inlaws belong to Uttar Pradesh. There, I saw, there is no respect of women. No one listens to them. Women are dominated. Only dominating women could be heard of, but the simple women are dominated in every way. No one bothers for them, whatever their condition. If some women dies in young age, the husbands are invited to remarry. I was aghast to see all this because condition of women in Maharashtra is not like this. In Uttar Pradesh the husband of a woman dies, the society forces her to remain a widow throughout the life.

So this was my experience with those labourer women. So I thought that first of all such an organisation should be started in Uttar Pradesh and it is very heartening that we are starting an organisation in Uttar Pradesh. It is my desire that these destitute and needy women should be given such training that they become self dependent and could rear up their children nicely. They should command respect. But only this organisation is not sufficient. This is at a very low level. Goal will be achieved only when women are given proper place in the society, when the men realize their

duty towards the women and their daughters. Life of the women is one sided. It should be changed. Men should look after their family, children, wife, mother with real love and understanding. So many of you are sitting here. If you all take a pledge to respect the women, then a lot would be achieved. Men never get widower but if a woman becomes widow her condition becomes miserable. One woman tells it to the other one that it was your hard luck. Not only this much, they say, "you have devoured your husband". I have heard myself saying them like this! May be that that is the reason that women of olden times used to become Satis. The worst happens if a widowed girl is charming.

So first of all I said that if any widow comes to Sahaj Yoga, she should get married, But who is going to marry a widow in our Country? If at all some one gets ready to marry a widow, he will keep on humiliating her. Manhood, they think makes them superior beings! They do not know that they have taken the road to hell. This is nothing but wickedness. This sort of behaviour is depravity. To behave in this manner with one's wife, who provides all comforts to you, is against our culture. It is written in the Indians scriptures 'यत्र नार्या पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता'. Gods reside where women are worshipped. But women have also to be worthy of worship. The woman of our country is in a miserable condition

today. That is the reason that there could be no good government in the country. These are the days of Navratri but all the Goddesses are unhappy. No blessings could come from them. Without respecting your wife and without taking good care of her, none of the Goddesses, including, Goddess Laxmi, would bless us. This is the cause of all distress in our country. If this tendency is overcome, then I think all the problems could be solved because the blessing of Shri Lakshmi comes when we respect the woman. Those who do not respect the Gruha Lakshmi, how do they deserve to be benefitted by the blessings of Goddess Lakshmi? I happened to see a Video Tape in which they showed the widows living in the temples of Vrindavana and Gokul. Poor lord Krishna might be concerned with the miserable state of these widows! Their condition is so miserable. They are exploited to such an extent that through out the day they are made to sing in the temples and only one Rupee is paid to them every day. The people there misuse them in every way. Even such a film did not prick the conscience of anyone!

There, there are five lakh such widows. No one thought that we are earning so much money, why not to do some thing for the benevolence of these women? Why not to start some project for them? It appears that men have lost all their sensitivity. No one thought of

their benevolence. A lot was shown in this film. I said, "there is no use of showing such films and the lady who came to show this film was motivated by the desire to defame the organisers. They have got enough publicity. If they have so much of money then why do not they construct nice Ashrams for these women. The existing Ashrams, which are very few in numbers, are not managed properly. So why not to have such Ashrams where these women are looked after in a nice way. Fed up from such a life, many of them commit suicide. In our society it is compulsory for a woman to get married and if the husband dies then there is no end of her miseries. It becomes difficult for her to live. She is surrounded by all sorts of troubles. Not that they are immoral. In foreign countries a widowed woman finds out another husband or takes up some business. Moral standards in our country are so high that thirty two thousand women obliterated themselves to protect their chastity and respect. What is the way then left for the women of this country? They cannot live with respect. Such a miserable state is there that I think that if at all one gets such disease and live in the hospital, some arrangement could be made for a diseased person. But how could you remove the pain of such women? Such a distress but no sympathy! Seeing a widow was considered to be ominous. Ritualistic people do not eat food cooked

by a widow. Our society is unaware of the fact that our scriptures do not allow such things. After the death of Ravana, Shri Rama married Mandodari, the wife of Ravana, to Vibhishna. But people say that Shri Rama was alright, yet widows cannot marry. Just imagine your own mother, sister or daughter in such a miserable condition! May God save from such a society! It is better not to have such a society and if at all some society is made everyone should have the right to live peacefully in it. So I would like that all those who have troubled women in the house or outside should transform themselves. They should realise their guilt of troubling a poor and helpless woman. Those, who have distressed their wives or daughters are also criminals. I cannot tell what punishment they will be subjected to. Now there will be dawn of Satya Yuga. It is necessary for everyone to adhere to Dharma to the path of righteousness. Essence of Dharma is love. Those who cannot love their wives, whom else they could love? One who could not love one's daughter how could he love anyone else? Her fault is only this much that she is a woman, Had there been no woman in the world, where would have been your mother and how could you take birth? Deep sensitivity towards this fact should arise. Maharashtra was also affected by this evil custom. However great men like Tilak, Gokhle, and Ramdev challenged this custom. They themselves married

widows and brought awakening against this custom. They brought many reforms. In Pune, education for women is free of charge. They do not have to pay even a single penny up to graduation. Much reforms are needed in this part of the country because condition here is much more miserable. People should be awakened to this problem. On the contrary, if the woman is dominating, she rules the family. Many women have learnt to dominate but there is no use of it. Women should absorb every thing because their powers are that of Mother Earth. One should awaken one's powers, use them for creative purposes, and live with self respect. Mere talking about it will not achieve anything. It should be thoroughly understood that this is a sin and it should not be allowed to happen. Only then there could be transformation in our country. Everyone, whether a Sahaj Yogi or non Sahaj Yogi, has the duty to protect the women being beaten in the neighbourhood. If some drunkard is creating nuisance than he should be checked. It is your social obligation. Until such an awakening takes place in you, this work could not be done.

There are some women who are so selfrespecting that they forbear everything. If you tell any widow to get remarried, she will be aghast. We had a Sahaj Yogini. She was very beautiful and had three children. Eldest son was 15-16 years old. Where-ever she went for

employment, some man or the other was mad after her. This is the tendency. People do not run after their own wives. They are attracted to other women and if the woman happens to be a widow nothing like that! Very carefully I asked her that the solution to your problem is that you get remarried. Immediately she fainted, "Shri Mataji why did you say such a thing? For what fault of mine you ordered this severe punishment?" It is no punishment at all. Such a conditioning in woman is the gift of the society. Once widowed, widowed. You cannot remarry. Nothing doing! Who will make them understand? Then I asked her son to talk to her and bring her round. She was beautiful in appearance and a widow. How could she live in a man dominated society? After once year she came round because by then she was badly caught in problems. She could realise that Mother is right. Then I married her to one American. All her children were nicely brought up and settled. Widowed women, some times, go a begging but shall not remarry. God has not commanded to do like that, nor is it written in any of the scriptures. These things are made to exploit the women. We do not believe in widowhood. What is widowhood? If the husband is dead, he is dead. Do not put his stamp on your forehead. Either both husband and wife die together otherwise the life of the woman is miserable. It is not destiny. Had it been Dharma, that couple would

have died together. But it is not the case. Women have suffered a lot on this account. Now you have absolutely no need to suffer.

Such women could be hot-tempered and quarrel-some. They start politics in the family. Such women could not be nice. They are always distressed and disturbed. So we have started this organisation on a small level. In it we shall endeavour to train such women so that they become self sufficient and live with self-respect. If they are young widows then we shall marry them to suitable men. If Indians are not willing to marry them then I will send them to America. That will be the best way. Indian men think too much of themselves. This ego should go. I always say that men need to be reformed not the women. What are they so much proud of? What do you think of yourselves? Just now someone was telling, if a man is an I.A.S. he is the greatest son-in-law. I said, what is there in an I.A.S? Always hand to mouth. I know it well that if they are honest, their income is not much. They suffer if they are honest or dishonest. Yet women prefer I.A.S. I am unable to understand as to how men think very great of them if they become I.A.S.! Anything could spoil the brains of the people, specially in India, and they start flying in the air. What ever atrocities they may commit after-wards, they regard it as their right. Followers of Jain Dharma

preach to protect mosquitoes and bed-bugs. They do not kill these parasites but they find no harm in beating their wives. She is your wife, she has not come to be beaten! If she opposes then how could she be a wife? The cause of this condition, this low level in our people is that our internal values are disappearing. In olden times grain - parchers used to beat their wives in our country. But now, I have seen, everyone beats one's wife and they are not ashamed of it. There is no pity left in them. In other matters they behave nicely but in this aspect they are absolutely shameless. They will not hesitate to scold their wives publically. Their conscience is not pricked. Is it the education that they receive in the family to behave like that? So I have decided to work hard for this organisation and ameliorate the condition of such women. The number of women in our country is more than 65%. If such a big and significant part of the population is made power-less than what is going to be the condition of the country? Your country is fully crippled. Big-big lectures, showing of films and plays will not achieve anything. You have to work it out. In one's own life, in the life of the society, some people have to show by their deeds that they are really reformists. Leave all the stupidities. It is all useless. People are conditioned in such a way that they are unable to get rid of their wickedness, and women are conditioned

in such a way that they go on forbearing everything. No one is bothered about the consequences. Children are being misled. They take to stealing and all other wickedness. How has it happened? Because the institution of family has broken, the society has become insignificant. So family system is very significant because certain families form a society and societies make a country. Now it is the people, who talk of the country but the family is disappearing. The family could live with honour, selfrespect and the love for the country only when the women in the family are respectable, when they are given due respect. We have to understand this point thoroughly. In Maharashtra also, we have some social system which exploit the daughter-in-laws. But all this will change. If they do not change, the children will beat the father. Then their brain will be set right. Human beings have so much ego in them. What is this ego about? What have you achieved to be so proud of?

Now it is pious duty of all of us to help this organisation, not only with money but also in bringing it up. The most important is to find out such destitute women, who could be sheltered there. We do not know where shall we get such women. If anyone of you knows about such destitute, troubled, helpless women and widows, who are suffering all these, they should bring them to this

organisation. They were telling that so far they have only hundred such women in the list. But this is very small number. Poor, downtrodden and helpless women could be brought about and helped. Only in our country the institution of family is continuing. In other countries family has broken. Women are responsible for it, not men. It is the Indian women who have supported the country. Otherwise things would have been very different. You must understand that if excesses are committed on the women then they will revolt. It will be harmful. It is the death of the love and affection which is harmful. Wisely protect your women and daughters. Look after them and love them. They should be aware of your love. Your love will not spoil them. Until the man is weak, women could never dominate him. But she should not be so much suppressed that the growth of the children gets affected. Now a days children do not respect their mothers. They are shy of touching the feet of their mothers. If the fathers have no time to look after them then children are bound to get astray. The news that we read in papers everyday is because the family system is falling. It must be kept in proper shape. This is the warp and woof of our society. Because of this you are sitting here today. If you want to evolve then you have to remember that respect of women and transformation of people should be your coveted goal. It is my intimate desire. I always give you my blessings, but you have to share these

blessings with other people. We have to integrate people. If you are unable to integrate one family, how are you going to integrate the whole world? All of us should live with love. Now you have become Sahaj Yogis. This is a great achievement. This is the path of knowledge. You know what is love and how to share it, how to pass it on. We will be astonished that the whole society will be transformed. We do not have to be like foreigners. Not at all. Their women go to courts. In America women marry seven-eight times and grab the riches of the husbands. We do not want all this. What do we desire? We desire love with each other and beautiful children. If it is achieved the whole society and the whole country will benefit. There is no need to go to courts and fight. If this is in the benefit of all then why not to take to it. We have to be very wise.

Many Sahaj Yogis are sitting here. I am telling something new for them. **If you are Sahaja Yogis than it should be expressed in your behaviour.** Every one should know that you are Sahaj Yogis. We should know that a person is either a Sahaj Yogi or a Non Sahaj Yogi. We should know the art of integrating all. With this Sahaj nature you should conquer the whole world. Register in your heart what I have said. This is my vision. You people could fulfil and relieve me of my heartache.

May God bless you

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri

सत्याच्या शोधात असणाऱ्या सर्व साधकांना आमचा नमस्कार.

एवढ्या दूरवरच्या ठिकाणी आपण लोक या कार्यासाठी एवढ्या मोठ्या संख्येने याल असे मला वाटत नव्हते. पण तुम्हा सर्वांना इथे जमलेले पाहून मला आनंद होत आहे.

एकदा आम्ही गाडीने प्रोग्रामसाठी जात असताना दौलताबादजवळ आमची गाडी नादुरुस्त झाली. म्हणून मी खाली उतरले. खरे तर हीहि एक 'सहज'चीच घटना म्हणायचे. खाली उतरल्यावर मला तिथे साधारण शंभर एक महिला व त्यांच्याबरोबरची मुले एका नळावर पाणी भरत असल्याचे दिसले. त्यांच्या अवतारावरून त्यांची परिस्थिति हलाखीची असल्याचे माझ्या लक्षात आले. चौकशी केल्यावर मला समजले की त्या सर्व बायका घटस्फोटित मुसलमान होत्या व मुलांसह अत्यंत हालाखीत जगत होत्या व दगड फोडण्याचे दुष्काळी मजुरी-कामावर लागल्या होत्या. राहण्यासाठी पडकी कच्ची घरे होती. अंगावर धड कपडे नव्हते. त्यांची सर्व दशा पाहिल्यावर मला रडूच आवरेना. माझ्या मनात आले की आपल्या देशाची पुरातन संस्कृति व स्त्रियांमध्ये चारित्र्याची पवित्रता असूनही लोकांची अशी दुर्दशा का व्हावी? माताच जर इतक्या हालाखीत जगत असल्या तर मुलांचे भवितव्य काय? मग मला वाटू लागले की अशा बेसहाय, निराधार व परित्यक्त महिलांसाठी मदत पुरवणारी एखादी संस्था उभारली पाहिजे. तीच व्यवस्था पुरवण्याचे कार्य आता इथे होत आहे.

विशेष तर उत्तर प्रदेशात मला आढळून आले की तेथील स्त्रियांची परिस्थिति फार वाईट आहे. विद्यान्यांना सर्व बाजूनी दबावाखाली ठेवले जाते. एखादी धोत, आक्रमक महिला सोडली तर सर्वसाधारण स्त्रियांना जगणेच नकोसे होण्याइतक्या वाईट परिस्थितीत कसे तरी दिवस काढावे लागतात. त्यातून विधवा असेल तर बघायलाच नको. मी तर हे सर्व पाहून हैराण होत असे. त्या मानाने महाराष्ट्रात इतकी वाईट स्थिति नाही. म्हणूनच उत्तर प्रदेशातच ही संस्था सुरू

करण्याचा माझा मानस होता. तीच इच्छा आता पूर्ण होणार आहे. ही फार आनंदाची गोष्ट आहे.

ज्या स्त्रिया निराधार आहेत त्यांना स्वतःच्या पायावर उभे राहता येईल, आपल्या मुलांचे व्यवस्थित पालन-पोषण करता येईल, समजात त्यांना प्रतिष्ठा मिळेल अशी व्यवस्था व शिक्षण या ठिकाणी झाले पाहिजे. अर्थात एक संस्था सुरू केली म्हणजे सर्व काही झाले असे नाही. कारण हा एक लहानसा प्रयत्न आहे. मोठ्या प्रमाणावर या बाबतीत सुधारणा होण्यासाठी सान्या समाजाचेच परिवर्तन व्हायला हवे. समाजात स्त्रीला आदराचे स्थान मिळायला हवे, सर्व पुरुषांना घरातील स्त्री व मुलांबाळांचे बाबतीतील त्यांचे कर्तव्य पार पाडण्याची त्यांची जबाबदारी त्यांच्या लक्षात आली पाहिजे. एरवी इथल्या स्त्रियांची हालत सुधारणे शक्य नाही. इथे एखादी स्त्री विधवा झाली तर विचारायलाच नको. आजूबाजूच्या स्त्रियाच तिला जिणे नकोसे करतात; म्हणूनच पूर्वी कदाचित सती जाणे त्या पसंत करीत असाव्यात. आपल्या इथेही कुणी विधवा सहजयोगात आली तर तिचा विवाह होण्यासाठी अवश्य प्रयत्न केला जाईल. पुरुषाने (पति) तर 'मी म्हणेन तेच खरे व तसेच झाले पाहिजे' हा अहंकाराचा हट्ट सोडला पाहिजे व पत्नीचा आदर राखला पाहिजे. भारतीय संस्कृतीमध्ये वचनच आहे "यत्र नार्या पूज्यते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात स्त्रीनेही स्वतःला पूजनीय राखले पाहिजे. एकंदरीत आपल्या देशात पूर्वीपासून स्त्रियांना चांगली वागणूक मिळत नसल्यामुळेच इथे कुठलेही साम्राज्य फार काळ टिकले नाही. कारण त्यांच्या पाठीशी देवीचे आशीर्वाद नव्हते. स्त्रीला समान वागणूक मिळाली व तिचा सन्मान ठेवला गेला तर आपले बरेचसे प्रश्न सुटतील. घरच्या लक्ष्मीला जर जपले नाही तर लक्ष्मीदेवीचे आशीर्वाद कसे बरे मिळतील?

अलीकडेच मी एक व्हीडिओ-फिल्म पाहिली. त्यात मथुरेतील विधवांची दुर्दशा दाखवली होती. दिवसभर गाणी म्हणूनही त्यांना फक्त एक रुपया मिळत असल्याचे दाखवले

होते. पण आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे असली फिल्म पाहूनही कुणाच्या मनात त्याबद्दल काही करण्याची जागृति आली नाही! ही एक संवेदनशून्यताच. म्हणून अशा स्त्रियांसाठी काही आश्रम वगैरेची कायदेशीर व्यवस्था झाली पाहिजे. परदेशात अशी परिस्थिति नाही; तिथे नीतिमतेला विशेष महत्त्व नसल्यामुळे विधवा स्त्रीला स्वतंत्रपणे काही घंदा करण्याची वा दुसरे लग्न करण्याची मुभा असते. पण आपल्याकडे विधवा स्त्रीला औषध-पाणी मिळण्याचीही मारामार. तिचे दर्शन म्हणजे अपशकून अशा खुळ्या समजुती. असल्या गोष्टी आपल्याकडील कुठल्याही शास्त्रांमध्ये सांगितलेल्या नाहीत. श्रीरामने तर मंदोदरी विधवा झाल्यावर तिचा विवाह बिभीषणाबरोबर लावून दिला. तेव्हा समाजाने या बाबतीत नीट विचार करून ही परिस्थिति सुधारली नाही तर तो रसातळाला जाईल यात शंका नाही. स्त्रियांची अशी दुर्दशा करणारे पुरुष महापापी म्हणावे लागेल.

ही परिस्थिति सुधारण्यासाठी प्रत्येकाने, विशेषतः पुरुषांनी, धर्मानुसार आचरण ठेवले पाहिजे; आणि धर्माचरणाची पहिली गोष्ट म्हणजे प्रेम. जो आपल्या पत्नी वा मुलाबद्दल प्रेम ठेवत नाही तो इतरांवर काय प्रेम करू शकणार? स्त्री होणे हा स्त्रीचा दोष नाही कारण तिच्या शिवाय पुरुषालाही माता मिळाली नसती व तो स्वतः जन्माला आला नसता. म्हणून समाजात या प्रश्नाविषयी तीव्र संवेदना असायला हवी. महाराष्ट्रातही पूर्वी बालविवाह वगैरे प्रकार व्हायचे. पण टिळक, रानडे, गोखले, कर्वे इत्यादी थोर नेत्यांनी समाजात स्त्रियांविषयी खूप जागृति निर्माण केली. स्त्रियांसाठी स्वतंत्र शिक्षण-संस्था काढल्या. पण या प्रदेशात त्याहूनही खूप प्रचंड कार्य होण्याची जरूरी आहे. कारण इथली परिस्थिति कमालीची वाईट आहे. म्हणून येथील लोकांमध्ये जागृति व्हायला हवी. त्यासाठी स्त्रियांनी जबरदस्त वा आक्रमक व्हायची जरूरी नाही. स्त्रियांनी सर्व काही आत्मसात करायचे असते, पृथ्वीमातेची त्यांच्यामधील शक्ति त्यांनी जागरूक करणेच योग्य आहे. स्त्रियांना सांभाळणे, त्यांना नीट वागणूक देणे हे पुरुषांचे (सहजयोगी असो वा नसो) कर्तव्य आहे आणि जिथे कुठे स्त्रियांना त्रास दिला जातो तिथे तिथे त्यांनी पुढे येऊन त्यांना संरक्षण दिले पाहिजे. अशी जागृति जोपर्यंत त्यांच्यात येत नाही तोपर्यंत काही यश येणार नाही. म्हणूनच ही संस्था आता सुरू होत आहे. इथे लहान प्रमाणावर का होईना पण पूर्ण निष्ठेने आपल्याला असे कार्य करायचे आहे की अशा निराधार स्त्रिया आपल्या पायावर उभ्या राहू शकतील; स्वतःला प्रतिष्ठा मिळवून स्वाभिमानाने जीवन जगू शकतील; शक्य असेल तिथे विधवांचे पुन्हा विवाह जगवण्याचे प्रयत्न आपण करू. मी तर माझ्याकडून होईल तेवढे लक्ष या संस्थेत

घालणार आहे. आपल्या देशात निम्म्याहून अधिक लोकसंख्या महिलांची आहे आणि एवढा मोठा भाग शक्तिहीन राहिला तर या देशाचे काय होईल हे लक्षात घ्या. नाटकं लिहून, कथा लिहून वा भाषणे करून काही होणार नाही. आता प्रत्यक्ष कार्य करून दाखवण्याची वेळ आली आहे. पुरुषांची अरेरावी चालूच राहिली आणि स्त्रिया हतबल होऊन सर्व सोशित राहिल्या तर त्याचा परिणाम मुलांवर होईल आणि तीही बिघडतील. कुटुंब व्यवस्था सर्व प्रकारे सुधारली तरच समाज सुधारणार कारण समाज हा कुटुंबांचाच बनलेला असतो. समाजाचाच देश बनतो. देशाच्या भवितव्यासाठी कुटुंब निरोगी व शक्तिशाली झाली पाहिजेत. म्हणून कुटुंबातील स्त्री हा महत्त्वाचा घटक आहे व तिचा सन्मान राखला पाहिजे. त्या दृष्टीने बदल घडवून आणलाच पाहिजे.

या संस्थेला सर्वांनी मदत केली पाहिजे. नुसतीच आर्थिक मदत नाही तर प्रत्यक्ष कार्यासाठी हातभार लावला पाहिजे. मुख्य म्हणजे पीडित, निराधार महिलांना शोधले पाहिजे, जिथे तिथे त्या आढळतील तिथून त्यांना या संस्थेत येण्यासाठी प्रवृत्त केले पाहिजे. सध्या शंभर महिलांसाठी इथे सोय होणार आहे; त्याशिवाय ज्या बाहेर राहतील त्यांनासुद्धा सहानुभूति दाखवली पाहिजे. त्यांच्या नातेवाईकांनाही समजावून त्यांना चांगली वागणूक मिळवून देण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. भारतात अजूनही कुटुंब-व्यवस्था टिकून आहे ती येथील स्त्रियांमुळे; म्हणून येथील पुरुषांनी स्त्रीचे कुटुंबातील महत्त्व ओळखून तिला प्रतिष्ठित व प्रेमाची वागणूक दिली पाहिजे. स्त्रियांनी पण अति-आक्रमक व सत्ता गाजवणारी बनू नये तसेच अति सहनशाली, दबाव सोसणारी पण बनू नये. हे महान कार्य आपल्या सर्वांना करायचे आहे व त्यात पुरुषांना जास्त जबाबदारी उचलायची आहे. त्यासाठीच मी तुम्हाला आशीर्वाद देत असते; माणसांमध्ये परिवर्तन घडवून आणणे, माणसा-माणसांना एकत्र जोडणे हे आपले ध्येय आहे. म्हणून सर्व सहजयोग्यांनी हे लक्षात ठेऊन एकमेकांशी प्रेमाने संबंध जोडले पाहिजेत तरच सहजयोग प्राप्त झाल्याचे सार्थक होईल. त्याने सारा समाज बदलून जाईल. सहजयोग्यांच्या व्यक्तिमत्त्व व स्वभावाचा प्रभाव पडून लोक तुमच्यामागे येतील.

मी जे हे सर्व सांगितले त्याची तुमच्या हृदयात नोंद करा. माझ्या हृदयात सलणारे हे दुःख आहे व ते दूर करणे तुमच्यावर अवलंबून आहे.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

● ● ●